7a - हिन्दी शिक्षण शास्त्र

* पाठ योजना *

अर्थ - अध्यापक द्वारा अध्यापन के लिए तैयार की गई विषय-वस्तु की एक विस्तृत रूप रेखा को ही पाठ योजना कहा जाता है। पाठ योजना से अभिप्राय उन सभी बातों से है जो एक निश्चित समय में पाठ्यवस्तु को स्पष्ट करने के लिए बालक के पूर्व ज्ञान का नवीन ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करता है।

मरसेल ने ठीक ही कहा है :- "शिक्षक केवल एक साधारण कलाकार के समान है जिसकी कक्षा की कृति दोषपूर्ण होती है। शिक्षक को ऐसा कलाकार नहीं बनकर अपितु श्रेष्ठ कलाकार बनने का प्रयास करना चाहिए जिसकी कृति पूर्ण तथा निर्दोष होती है। ऐसा वह तभी कर सकता है जब उसे पाठ-योजना के सामान्य सिद्धांतों का पूर्ण ज्ञान हो।"

अतः कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक रूप से की गई क्रमबद्ध तैयारी को ही पाठ-योजना कहते हैं। बिना-पाठ योजना के योग्यतम शिक्षक भी कक्षा में असफल हो जाते हैं। पाठ-योजना के रूप में

2017

Scanned with CamScanner

MAY - 2017					
M	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
W	3	10	17	24	31
T	4	11	18	25	
F	5	12	19	26	
S	6	13	20	27	
S	7	14	21	28	

हो विभिन्न विद्वानों में मतभेद हो सकता है किन्तु इसकी आवश्यकता पर दो मत नहीं हो सकते। पाठ योजना में बालक के अर्जित ज्ञान, नवीन ज्ञान प्रश्न विधि, साधन सामग्री आदि का वितरण होता है। वास्तव में पाठ् योजना उस कथन का शीर्षक कही जा सकती है जो इसका विवरण देता है। ~~वास्तव में पाठ् योजना~~ कि शिक्षक को क्या-क्या उपलब्धियाँ प्राप्त करनी है तथा किन-किन साधनों द्वारा इन्हे कक्षाओं के फलस्वरूप एक कालांश के अन्दर प्राप्त किया जा सकता है।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि -

(1) पाठ-योजना कक्षा कार्य की पूर्व योजना है।

(2) पाठ-योजना मे शिक्षक पाठ के उद्देश्यों तथा उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विभिन्न क्रियाओं को निश्चित करता है।

(3) पाठ-योजनाओं में अनुभवों को संगठित किया जाता है।

इस प्रकार शिक्षण अधिगम व्यवस्था पाठ-योजना शिक्षक के प्रतिदिन के कार्य पाठ्यवस्तु व शिक्षक क्रियाओं को क्रमबद्ध नियोजित करने की लिखित व्यवस्था है।

Scanned with CamScanner

27 THURSDAY • APRIL

* पाठ - योजना की आवश्यकता *

पाठ योजनाएँ शिक्षण नियोजन व संगठन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है जो निम्न है —

(1) यह अध्यापक शिक्षण में छात्राध्यापकों को अध्यापन में दिशा निर्देश प्रदान करती है।

(2) यह अध्यापक को शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति में विभिन्न क्रियाओं के सम्पादन में अन्तर्दृष्टि प्रदान करती है।

(3) यह कार्य विश्लेषण में सहायक होती है।

(4) यह नए ज्ञान को पूर्व ज्ञान पर आधारित करने में मदद करती है।

(5) यह पाठ्य वस्तु के प्रस्तुतीकरण में प्रयुक्त सहायक शिक्षण सामग्री, युक्तियों व पद्धतियों का पूर्वाभ्यास प्रदान करती है।

(6) यह अध्यापक को मूल बिन्दु से भटकने नहीं देती है।

(7) यह शिक्षण के दौरान अध्यापक किन बिन्दुओं पर बल प्रदान करता है और किन पर नहीं, इसका पूर्व अनुमान प्रदान करती है।

Scanned with CamScanner

(8) यह वैयक्तिक भिन्नताओं के अनुरूप पाठ को ढालने में सहायक है।

(9) अध्यापक का सफल शिक्षण कौशल उसकी पाठ-योजना की है।

(10) यह अध्यापकों में सोचने तर्क करने निर्णय लेने व कल्पना करने के गुणों को विकसित करती है।

(11) यह अध्यापक में कक्षा-शिक्षण में आत्म-विश्वास जगाती है।

(12) यह शिक्षण कार्य को सीमाओं में रखकर अध्यापक के श्रम, शक्ति व समय को अपव्यय होने से बचाती है।

(13) यह अध्यापक को विषय संचालन में कुशलता प्रदान करती है।

(14) यह शिक्षण की विचारहीनता को दूर रखती है।

(15) यह शिक्षण कार्य को नियोजित करके उसे नियमित व व्यवस्थित रूप देती है।

Scanned with CamScanner